ऑस्कर रोमेरो

(1917-1980)

इस्लाम की तरह ही कैथोलिक धर्म भी ऐतिहासिक रूप से हमेशा शांति से जुड़ा नहीं रहा है - विशेष रूप से धर्मयुद्ध (क्रुसडेस) के मामले में, कैथोलिक चर्च द्वारा शुरू किए गए सैन्य अभियानों का सदियों लम्बा इतिहास रहा है. यह भी कहा जाता है, कि कुछ उत्कृष्ट कैथोलिक, शांति के नायक रहे हैं, खासकर आधुनिक समय में. ऑस्कर रोमेरो एक ऐसे ही एक हीरो थे.



ऑस्कर रोमेरो, अल-सल्वाडोर के कैथोलिक चर्चों के आर्कबिशप थे. अल-सल्वाडोर एक सैन्य सरकार और कुछ अमीर लोगों द्वारा नियंत्रित एक बहुत ही गरीब लैटिन अमेरिकी देश है. हालाँकि अब वहां लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार है, फिर भी कुछ अमीर लोग ने अभी भी अधिकांश धन हथिया लिया है, जिससे देश का अधिकांश हिस्सा बहुत गरीब है. 1977-1980 में आर्कबिशप के रूप में, रोमेरो के समय के दौरान, सैन्य सरकार ने देश के गरीब लोगों को जीवन को बहुत कठिन बना दिया. उस समय, कम वेतन वाले हड़ताली श्रमिकों को कुछ भी गलत करने पर अक्सर गिरफ्तार किया जाता था और/या बिना किसी परीक्षण (ट्रायल) के, बिना किसी सबूत के, क़त्ल कर दिया जाता था. मूल रूप से, आर्कबिशप रोमेरो का मानना था कि एक धार्मिक नेता के रूप में, इस तरह की राजनीतिक समस्याओं में शामिल होना उनका काम नहीं था. लेकिन फिर कुछ ऐसा हुआ कि उन्होंने अपना मन बदला. उनके एक पुजारी (प्रीस्ट) की साल्वाडोरियन पुलिस ने हत्या कर दी. वो पुजारी, अल-सल्वाडोर के गरीब खेत मजदूरों को संगठित करने और बेहतर मजदूरी की मांग करने का आग्रह कर रहे थे. इस हत्या के बाद रोमेरो को पुजारी (प्रीस्ट) का मृत शरीर देखने के लिए बुलाया गया. सरकार इसे एक चेतावनी के रूप में दिखा रही थी. सरकार यह दिखाना चाहती थी कि वो हर उस व्यक्ति को ठिकाने लगाएगी जो राजनीति में दखल देगा और उसका उस पुजारी (प्रीस्ट) जैसा ही हश्र होगा. उस समय, रोमेरो में एक बहुत बड़ा परिवर्तन आया.

उन्होंने अपने चर्च को छोड़कर, अल-सल्वाडोर में बाकी सभी चर्चों को बंद करके पुलिस द्वारा की गई हत्या का विरोध करने का फैसला किया. अगले रविवार को, उन्होंने मारे गए पुजारी के सम्मान में एक सामूहिक आयोजन किया जिसमें हजारों लोग शामिल हुए.

उस घटना के बाद से रोमेरो ने अपने देश में अन्याय से लड़ने के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया. उन्होंने अपनी सरकार की निंदा करते हुए रेडियो पर कड़े उपदेश दिए. उन्होंने अमेरिका से अल-सल्वाडोर की सरकार को, पैसा देना बंद करने को कहा. उसने परमेश्वर के नाम पर सल्वाडोर की सेना को आदेश दिया कि वो अपने ही लोगों और देशवासियों को मारना बंद करें. यीशु के उदाहरण के बाद, रोमेरो अहिंसा को, हिंसा की एकमात्र प्रतिक्रिया मानते थे.

आर्कबिशप ऑस्कर रोमेरो ने, कैथोलिक चर्च की क्षमता को शांति और न्याय के एक प्रकाशस्तंभ के रूप में समझा - और उन्होंने इस समझ को कार्रवाई में बदला.

